यज्ञके कलशोंपर नारिकेलके स्थापनका क्रम

अधोमुखं शत्रुविवर्धनाय ऊर्ध्वस्य वक्त्रं बहुरोगवृद्ध्यै।
प्राचीमुखं वित्तविनाशनाय तस्माच्छुभं सम्मुखनारिकेलम्॥

'यदि नारिकेल (नारियल) अधोमुख रखा जाय, तो उससे शत्रुओंकी वृद्धि होती है, यदि ऊपरको मुख करके रखा जाय, तो उससे बहुतसे रोगोंकी वृद्धि होती है तथा यदि पूर्वकी ओर मुख करके रखा जाय, तो उससे धननाश होता है। इसलिये नारियलको सम्मुख रखना शुभ है।'

Scanned by CamScanner